ISBN : 978-93-92568-24-4

डॉ. गिरीश कांत पाण्डेय
डॉ.गीतांजलि चन्द्राकर

भारतीय सैन्य पद्धति का इतिहास

Publisher
Aditi Publication

भारतीय सैन्य पद्धति का इतिहास

''स्नातक, स्नातकोत्तर एवं प्रतियोगी परीक्षा हेतु बहुउपयोगी''

लेखकगण

डॉ. गिरीश कांत पाण्डेय

(एम.एस–सी., बी.जे., पी.एच–डी., डी.लिट्.)

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, रक्षा अध्ययन विभाग,

शा. नागार्जुन स्नातकोत्तर विज्ञान महाविद्यालय,

रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

एवं

डॉ. गीतांजलि चन्द्राकर

(एम.एस–सी., पी.एच–डी., पी.डी.एफ.)

रक्षा अध्ययन विभाग,

शा. नागार्जुन स्नातकोत्तर विज्ञान महाविद्यालय,

रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

Aditi Publication

Publisher

Aditi Publication, Raipur, Chhattisgarh, INDIA

भारतीय सैन्य पद्धति का इतिहास

2022
Edition - **01**

लेखकगण

डॉ. गिरीश कांत पाण्डेय
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, रक्षा अध्ययन विभाग,
शा. नागार्जुन स्नातकोत्तर विज्ञान महाविद्यालय,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

डॉ. गीतांजलि चन्द्राकर
रक्षा अध्ययन विभाग,
शा. नागार्जुन स्नातकोत्तर विज्ञान महाविद्यालय,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ISBN : **978-93-92568-24-4**

Copyright© All Rights Reserved
No parts of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of authors.

Price : Rs. **340/-**

Publisher and Printer :
Aditi Publication,
Opp. New Panchajanya vidya Mandir, Near Tiranga Chowk,
Kushalpur, Raipur, Chhattisgarh, INDIA
+91 9425210308

प्राक्कथन

आदिकाल से ही युद्ध की परम्परा चली आ रही है। मानव जाति का इतिहास युद्ध के अध्ययन के बिना अधूरा है और युद्ध का इतिहास उतना ही पुराना है जितनी मानव जाति की कहानी। युद्ध मानव सभ्यता के विकास के प्रमुख कारणों में से एक हैं। अनेक सभ्यताओं का अभ्युदय एवं विनाश हुआ, परन्तु युद्ध कभी भी समाप्त नहीं हुआ। जैसे–जैसे सभ्यता का विकास हुआ वैसे–वैसे नवीन हथियारों के निर्माण के फलस्वरूप युद्ध के स्वरूप में परिवर्तन अवश्य आया है।

यद्यपि भारत के सैन्य इतिहास अनेक उतार–चढ़ाव को अपने अन्दर समेटे हुये आज भी पिछले अनुभवों से प्रेरणा लेने सावधान और सतर्क रहने की शिक्षा देता है। यह संतोष का विषय है कि भारतीय सैन्य इतिहास की साहित्य रचना में तेजी से कार्य हो रहा है। जिससे देश के प्रबुद्ध नागरिक और सैन्य विज्ञान के अध्ययन से सम्बद्ध छात्र अतीत की घटनाओं के विभिन्न पक्षों पर चिन्तन करते हुए एक ऐसे राजमार्ग का निर्माण कर सके जिस पर युद्ध की नहीं बल्कि शांति की आधारशिला को युग–युगांतर तक आदरांजलि अर्पित की जा सके।

इस तथ्य को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित स्नातक, स्नातकोत्तर एवं प्रतियोगी परीक्षा हेतु बहुउपयोगी अपने में समाहित करती यह पुस्तक सभी विश्वविद्यालयों के छात्र–छात्राओं एवं सुधी पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी ऐसा विश्वास है।

प्रस्तुत ग्रंथ में भारत के प्राचीन काल से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक का, विभिन्न सैन्य पद्धतियों का सरल शब्दों में

प्रस्तुतीकरण है। कई बड़े एवं छोटे साम्राज्य ने लगातार युद्ध के क्षेत्र में नए–नए बदलाव लाए, उन सभी को जगह दे पाना संभव नहीं था, तथापि महत्वपूर्ण एवं निर्णायक युद्ध पद्धतियों को जरूर सम्मिलित किया गया है।

प्रस्तुत ग्रंथ कई चित्र, चित्रकारों की कल्पना पर आधारित है। बीच–बीच में विषय से संबंधित कई रोचक जानकारियां भी पाठकों के लिए उपलब्ध है।

प्रस्तुत पुस्तक की भाषा को यथा संभव सरल और शैली को बोधगम्य बनाने का प्रयास किया गया है। पुस्तक प्रणयन में जिन विद्वानों, लेखकों की कृतियों का सहारा लिया गया है उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित तथा अंत में सभी महानुभावों का जिनका जाने–अनजाने में सहयोग लेकर यह रचना पूर्ण हो सकी है, हम हृदय से आभारी हैं।

सुधार के लिये जो भी सुझाव आयेंगे उनका सहर्ष स्वागत किया जायेगा।

डॉ. गिरीश कांत पाण्डेय
डॉ. गीतांजलि चंद्राकर

अनुक्रमणिका

क्र.	अध्याय	पृ.क्र.
01.	भारतीय सैन्य इतिहास का अध्ययन	01
02.	पौराणिक एवं महाकाव्य कालीन सैन्य इतिहास	15
03.	भारत—यूनान युद्ध कला एवं झेलम का संग्राम (326 ई.पू.)	41
04.	मौर्य कालीन सैन्य पद्धति (322 ई.पू. से 185 ई.पू.)	55
05.	गुप्तकालीन एवं वर्धन कालीन सैन्य पद्धति	78
06.	राजपूत कालीन सैन्य पद्धति	94
07.	सल्तनत कालीन सैन्य पद्धति	116
08.	मुगल सैन्य पद्धति	127
09.	मराठा कालीन सैन्य पद्धति	143
10.	सिक्ख सैन्य पद्धति	159
11.	कम्पनी सेना एवं प्रथम मुक्ति संग्राम	172
12.	ब्रिटिश ताज के अधीन सेना	182
13.	स्वतंत्रता उपरान्त सेना का राष्ट्रीयकरण	187
	संदर्भ सूची	194

''भारतवर्ष''

वर्ष का अर्थ संवत्सर तथा भूखंड दोनों होता है। यहां वर्ष का अर्थ खंड के रूप में है। भारतवर्ष का अर्थ ''भरत की भूमि'' है। प्रश्न उठता है कि भरत कौन है? वास्तव में, प्राचीन ग्रंथों में कई भरत का उल्लेख है, मसलन ऋषभदेव के जेष्ठ पुत्र का नाम भरत था; शकुंतला और दुष्यंत के प्रतापी पुत्र का नाम भरत था; भगवान श्री राम के भ्राता का नाम भी भरत था; कुछ ग्रंथों में प्रजा के भरण–पोषण करने के कारण मनु को भरत कहा गया है।

भारतवर्ष का उल्लेख रामायण एवं महाभारत महाकाव्य के अतिरिक्त ब्राह्मण ग्रंथों, स्मृतियों तथा पुराणों, विशेषकर ब्रह्म पुराण, मत्स्य पुराण, ब्रह्मांड पुराण, आदि में मिलता है। कहीं–कहीं इसे भरत द्विप भी कहा गया है।

प्राचीन ग्रंथों के अनुसार यूरोप और एशिया महाद्वीप का सम्मिलित भाग को 'जम्बु द्विप' कहा जाता था। इस जम्बु द्विप के दक्षिण एशिया भू–क्षेत्र को 'भरतखंड' लिखा गया है। इस भरतखंड अर्थात् भारतवर्ष में पूर्वी ईरान के क्षेत्र जाबुलिस्तान, अफगानिस्तान का उत्तरी क्षेत्र कंबोज, गांधार, कैकेय, सप्त सिंधु से लेकर बंग, प्राग्ज्योतिष (आसाम), मणिपुर, ब्रह्मदेश (म्यानमार), मलयभूमि (मलेशिया), यव (जावा), कंबुज (कंबोडिया) तक; हिमालय विशेषकर कैलाश, मानसरोवर आदि से सिंहल द्विप (श्रीलंका) तक; प्रभासपाटन, भरूकच्छ से ताम्रलिपि, पुहार तक; सिंधु जल अपवाह से गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, क्षिप्रा, नर्मदा, चित्रोत्पला, तुंगा एवं भद्रा, गोदावरी, कावेरी अपवाह तक धरती का उल्लेख है। हिमालय से नीचे और विंध्याचल से ऊपर के भूक्षेत्र को 'आर्यवत' तथा विंध्याचल से नीचे और रत्नाकर सागर से ऊपर का भूक्षेत्र 'द्रविड़' कहा गया है। प्राचीन काल में, भारत में सोलह महाजनपद तथा कई छोटे जनपदों का उल्लेख मिलता है। आज भी हिंदू पूजा स्थलों का उल्लेख इस प्रकार होता है – ''जम्बु द्विपे, भरत खण्डे, आर्यावर्ते, अमुक जनपदे, अमुक नगरे, ...''

भारतवर्ष को इतिहास में, विभिन्न नामों से जाना जाता रहा है – भारत, भारतवर्ष, भरतखंड, भारतदेश, भारतभूमि, आर्यावर्त, ब्रह्मवर्त, हिमवर्ष, अजनाभवर्ष, हिंद, हिंदुस्तान, हिंदुस्तां, नरभू, इंडे, इंडिया, आदि।

प्रो. गिरीश कांत पांडेय

प्रस्तुत ग्रंथ में भारत के तीनो काल का सैन्य इतिहास का वर्णन किया गया है। इसमें सिन्धु घाटी सभ्यता कालीन, वैदिक कालीन, मगध सम्राज्य, भारत का स्वर्ण युग, उत्कृष्ट युग एवं उत्तर प्राचीन काल, प्राचीन युग का वर्णन है। साथ ही राजपूत काल तुर्क-अफगान काल, मध्यकाल जिसमें मुगल, मराठा, सिक्ख काल शामिल है तथा आधुनिक काल के रुप में ब्रिटिश राज एवं स्वतंत्रता उपरांत भारतीय सेना का पुर्नगठन वर्णित है। यह ग्रंथ भारत के सैन्य जानकारी के लिये पाठको को नये सिरे से सोचने को प्रेरित करेगा।

9 789392 568244

₹ 340

ADITI PUBLICATION

Opp. New Panchjanya Vidya Mandir, Near Tiranga Chowk,
Kushalpur, Raipur, Dist.- Raipur, Chhattisgarh,
INDIA Pin - 492001 Phone : +91 9425210308
E-mail:shodhsamagam1@gmail.com,
www.shodhsamagam.com